चौदे तबक करसी कायम, ए जो झूठे खाकी बुत।
मोमिन बरकत इन कदमों, जाकी असल हक निसबत।। ८६ ।।

अब मोमिन जो श्री राजजी की अंगना हैं, धनी के चरणों की कृपा से चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड के झूठे जीवों को अखण्ड मुक्ति देंगे।

सबों भिस्त दे घरों आवसी, रूहें कदम ग्रहें बड़ी मत।
अर्स के तन जो मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। ८७ ।।

यह रूहें जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी से श्री राजजी के चरण कमलों को प्राप्त करके सबको अखण्ड मुक्ति प्रदान कर अपने घर परमधाम वापस आएंगे। मोमिनों की परआतम श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

ए काम किया सब हुकमें, अव्वल बीच आखिरत।
हक बका द्वार खोलिया, महामत ले आए निसबत।। ८८ ।।

यह सब काम श्री राजजी महाराज के हुकम ने तीन सूरतें धारण कर अव्वल रसूल साहब बसरी, दूसरे बीच में श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) मलकी और आखिर हकी सूरत इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने अखण्ड परमधाम के दरवाजे खोलकर अपने मोमिनों को जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं घर वापस ले आए।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ४४३ ॥

कदम परिकरमा निसबत

उमर जात प्यारी सुपने, निस दिन पिउ जपत।
लाल कदम न छोड़ें मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनों की रात-दिन संसार में धनी का नाम जपते-जपते ही उम्र बीत रही है। जो रूहें श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह इन चरण कमलों की लाल तली को नहीं छोड़ सकते।

मांग लई प्यारी उमर, ए जो रब्द के बखत।
लाल पांउं तली छोड़ें क्यों मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। २ ।।

इस्क रब्द के वार्तालाप के समय मोमिनों ने श्री राजजी महाराज से इस संसार को मांगा था। अब जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह उनके चरणों की लाल तली और एड़ियों को छोड़ नहीं सकते।

पांउं निस दिन छोड़ें ना मोमिन, सुपने या सोवत।
सो क्यों छोड़ें बेसक जागे, जाकी असल हक निसबत।। ३ ।।

रात-दिन सपने में या नींद में श्री राजजी के चरणों को मोमिन नहीं छोड़ते तो अब यह श्री राजजी महाराज की अखण्ड वाणी से निस्सन्देह हो गए हैं, तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह जागकर इन चरणों को कैसे छोड़ें?

Nijanand App

जब उड़ी नींद असल की, हक देखे होंए जाग्रतं।
सुख लेसी खेल का अर्स में, जाकी असल हक निसबत।। ४ ।।

जब परआतम की फरामोशी दूर होगी तब असल तन में जागृत होकर श्री राजजी को देखेंगी और खेल का सुख परमधाम में लेंगी, क्योंकि श्री राजजी महाराज की यह अंगना हैं।

दीजे परिकरमा अर्स की, मोमिन दिल ना सखत।
सूते भी कदम ना छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ५ ।।

मोमिन के दिल में श्री राजजी महाराज के विराजमान होने से यह रहम दिल हो गए हैं। इसलिए इनको साक्षात् अर्श समझकर इनकी परिकरमा करो। जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह झूठे संसार में भी धनी के चरण नहीं छोड़ते, इनका दिल धनी का अर्श है।

सुख आगूं अर्स द्वार के, कई बिध केलि करत।
सो क्यों छोड़ें चरन हक के, जाकी असल हक निसबत।। ६ ।।

रंग महल के सामने चांदनी चौक के बेहद सुख हैं। जहां पशु, पक्षी नए-नए खेल करके रिझाते हैं। ऐसे धनी के चरण कमलों को श्री राजजी की अंगना कैसे छोड़ें?

करें सुपने में कुरबानियां, ऐसे मोमिन अलमस्त।
सूते भी कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज के दीवाने मोमिन संसार में भी श्री राजजी महाराज के चरणों को नहीं छोड़ेंगे। वह श्री राजजी की अंगना हैं, इसलिए सपने के संसार को छोड़कर कुर्बानी देंगे।

सुपने कदम पकड़ के, तापर अपना आप वारत।
हक करें सुरखरू इनको, जाकी असल हक निसबत।। ८ ।।

मोमिन सपने के संसार में श्री राजजी महाराज के चरणों पर अपने आपको समर्पित करते हैं। तब श्री राजजी महाराज इनको पाक करेंगे (निस्सन्देह करेंगे), क्योंकि यह उनकी अंगना हैं।

लेवें सुख बाग मोहोलनमें, मलारमें बरखा रूत।
रूहें क्यों छोड़ें चरन सुपने, जाकी असल हक निसबत।। ९ ।।

मोमिन परमधाम के बाग, बगीचों के तथा रंग महल के सुख वर्षा ऋतु में लेते हैं, तो ऐसी रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में भी उनके चरणों को क्यों छोड़ेंगी?

रूहें खेलें मलार बनमें, हक हादी की सोहोबत।
ए क्यों छोड़ें चरन मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। १० ।।

रूहें श्री राजश्यामाजी के साथ वर्षा ऋतु में वन में खेलती हैं। यह श्री राजजी की अंगना हैं तो उनके चरण कमलों को कैसे छोड़ें?

मोमिन बसें अर्स बनमें, ऊपर चाह्या मेह बरसत।
सो क्यों रहें इन पांउं बिना, जाकी असल हक निसबत।। ११ ।।

मोमिन अर्श के वनों में खेलते हैं। जहां उनकी चाहना पर ही वर्षा होती है तो जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह इनके चरणों के बिना कैसे रह सकती हैं?

Nijanand App

रूहें मलार अर्स बाग में, ऊपर सेरड़ियां गरजत।
रूहें सुपने पांउं न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। १२ ।।

रूहें वर्षा ऋतु में बगीचों में आनन्द लेती हैं, जहां ऊपर से बादल गरजते हैं तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में भी श्री राजजी के चरण नहीं छोड़तीं।

रूहें खेलें हक हादी सों बन में, नूर बिजलियां चमकत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। १३ ।।

रूहें श्री राजजी महाराज के साथ वन में खेलती हैं, जहां पर नूर की बिजली चमकती है तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में श्री राजजी के चरणों को कैसे छोड़ सकती हैं?

हक खेलोंने कई खेलावहीं, कई मोर कला पूरत।
सो क्यों छोड़ें पांउं हक के, जाकी असल हक निसबत।। १४ ।।

इन वनों में श्री राजजी महाराज पशु-पक्षियों को कई तरह के खेल खिलाते हैं। मोर अपनी सुन्दर कला से नाच दिखाकर धनी को रिझाते हैं तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में श्री राजजी के चरणों को कैसे छोड़ सकती हैं?

रूहें खेलें अर्स के बागमें, कई पसु पंखी खेलावत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। १५ ।।

रूहें परमधाम के बगीचों में खेलती हैं। जहां कई तरह के पशु-पक्षियों को भी खेल खिलाती हैं तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में इनके चरणों को कैसे छोड़ें?

रूहें सुपने दुनीको न लागहीं, जाको मुरदार कही हजरत।
ए हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। १६ ।।

जिस दुनियां को रसूल साहब ने नाचीज कहा है, मोमिनों की उसमें रुचि नहीं होगी। जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में धनी को नहीं छोड़ सकतीं।

ए रूहें हक हादी संग, विध विध बन विलसत।
ए क्यों छोड़ें कदम मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। १७ ।।

रूहें श्री राजश्यामाजी के साथ वनों में तरह-तरह के विलास करती हैं। वह श्री राजजी की अंगना अब संसार में उनके चरणों को कैसे छोड़ें?

खेलने वाली सातों घाटकी, हक प्रेम सुराही पिलावत।
रूहें सुपने न छोड़ें कदम को, जाकी असल हक निसबत।। १८ ।।

रूहें परमधाम के सातों घाटों में खेलने वाली हैं। जिन्हें श्री राजजी महाराज अपने दिल की सुराही से इश्क पिलाते हैं। ऐसी रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह सपने के संसार में श्री राजजी के चरणों को क्यों छोड़ेंगी?

रूहें सराब हक सुराही का, पैदरपे पीवत।
बेहोस हुए न छोड़ें कदम, जाकी असल हक निसबत।। १९ ।।

रूहें श्री राजजी महाराज के गंजान गंज इश्क से भरे दिल की सुराही से इश्क की शराब लगातार पीकर बेहोश हो जाती हैं। श्री राजजी की अंगना होने के कारण संसार में उनके चरण नहीं छोड़तीं।

Nijanand App

झूलें पुल मोहोल साम सामी, जल बीच मोहोल झलकत।
रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। २० ।।

रूहें जमुनाजी के पुलों के महलों में लगे झूलों में आमने-सामने झूला झूलती हैं और जमुनाजी के जल के अन्दर दोनों पुलों की झांई झलकती है तो ऐसी श्री राजजी महाराज की अंगना संसार में श्री राजजी के चरणों को कैसे छोड़ें?

रूहें रमें किनारे जोए के, हक हादी रूहें झीलत।
सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। २१ ।।

रूहें जमुनाजी के किनारे पर खेलती हैं और श्री राजश्यामाजी के साथ झीलना (स्नान) करती हैं। ऐसी रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में धनी के चरण कैसे छोड़ सकती हैं?

हक हादी रूहें पाट पर, मन चाह्या सिनगार साजत।
रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। २२ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें पाट घाट पर बैठकर मनचाहे सिनगार सजती हैं तो ऐसी रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, संसार में धनी के चरण कैसे छोड़ेंगी?

रूहें मिलावा अर्स बाग में, देखो किन विध ए सोभित।
रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। २३ ।।

रूहों का मिलावा परमधाम के बगीचों में कितना सुन्दर लगता है तो ऐसे मोमिन जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में धनी के चरण कैसे छोड़ेंगे?

पसु पंखी बोलें इन समें, कई विध बन गूंजत।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। २४ ।।

वनों में इस समय पशु-पक्षियों की कई तरह की आवाज गूंजती है तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में श्री राजजी के चरण कैसे छोड़ सकती हैं?

विध विधके कुन्ज बनमें, हक रूहें केलि करत।
सो क्यों छोड़ें इन कदम को, जाकी असल हक निसबत।। २५ ।।

रूहें परमधाम के कुंजवन में श्री राजजी के साथ तरह-तरह के खेल करती हैं तो श्री राजजी की अंगना रूहें संसार में धनी के चरण कैसे छोड़ सकती हैं?

बट पीपल की चौकियां, हक हादी रूहें हींचत।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। २६ ।।

बट-पीपल की चौकी में रूहें श्री राजश्यामाजी के साथ झूला झूलती हैं तो संसार में श्री राजजी की अंगना उनके चरणों से कैसे जुदा होंगी?

ताल पाल बन गिरदवाए, ऊपर कई मोहोल देखत।
सो क्यों छोड़ें हक कदमको, जाकी असल हक निसबत।। २७ ।।

हौज कौसर ताल की पाल पर तथा चारों तरफ के वनों की तथा टापू महल की शोभा दिखाई देती है तो जो रूहें श्री राजजी की अंगना हैं, वह उनके चरणों को कैसे छोड़ सकती हैं?

Nijanand App

सोभा चारों घाट की, जित जोए हौज मिलत।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। २८ ।।

हौज कौसर ताल के चार घाट जहां जमुनाजी हौज कौसर में मिलती हैं, उस शोभा को कैसे कहें तो श्री राजजी की अंगना रूहें संसार में धनी के चरण कैसे छोड़ सकती हैं?

ए जो कहे मेहेराव, घाटों ऊपर सोभित।
हक कदम हिरदे रूह के, जाकी असल हक निसबत।। २९ ।।

हौज कौसर ताल पर घाटों के ऊपर मेहराबें शोभा देती हैं। श्री राजजी के चरण रूह के दिल में हैं तो संसार में वह चरण कैसे छोड़ सकती हैं?

खेलें हौज कौसर के बागमें, रूहें बन डारी झूलत।
हक चरन सुपने न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ३० ।।

हौज कौसर तालाब में रूहें वन की डालियों पर झूलती हैं, इसलिए श्री राजजी की अंगना संसार में धनी के चरणों को नहीं छोड़ेंगी।

रूहे खेलें टापू के गुरज में, जाए झरोखों बैठत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। ३१ ।।

यह टापू महल के साथ गुर्जों में खेलती हैं और झरोखों में बैठकर देखती हैं तो ऐसी श्री राजजी की जो अंगना हैं वह संसार में धनी के चरणों के बिना नहीं रह सकतीं।

खेलें अर्स हौज टापू मिने, हक भेले चांदनी चढ़त।
रूहें क्यों रहें इन कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। ३२ ।।

रूहें श्री राजजी महाराज के साथ हौज कौसर के टापू में खेलती हैं और श्री राजजी के साथ चांदनी पर चढ़ती हैं तो श्री राजजी की अंगना संसार में श्री राजजी के चरणों के बिना कैसे रह सकती हैं?

नेहेरें मोहोल ढ़ांपियां, जल चक्राव ज्यों चलत।
मोमिन हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ३३ ।।

जवेरों की नहरों में जल ढका हुआ चक्राव दार (भंवर) चलता है तो संसार में रूहें जो धनी की अंगना हैं, वह इन चरणों को कैसे छोड़ें?

कई मोहोल मानिक पहाड़में, हिसाबमें न आवत।
ए मोमिन कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ३४ ।।

माणिक पहाड़ के महल बिना हिसाब के हैं तो श्री राजजी की अंगना ऐसी शोभा को छोड़कर संसार में श्री राजजी के चरणों को कैसे छोड़ें? वह धनी की अंगना हैं।

कई ताल नेहेरें मानिक पर, ढ़िग हिंडोलों चादरें गिरत।
ए कदम मोमिन क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ३५ ।।

मानिक पहाड़ में कई तरह के तालाब, नहरें, हिंडोले और पानी की चादरें गिरती हैं तो ऐसे कदमों को जो श्री राजजी की अंगना हैं, संसार में क्यों छोड़ेंगी।

Nijanand App

कई भांतों नेहेरें बनमें, सागरों निकस मिलत।
मोमिन खेलें कदम पकड़के, जाकी असल हक निसबत।। ३६ ।।

वन की नहरों में सागरों से नहरें निकलकर सारे वनों में घूमकर सागरों में मिल जाती हैं। यहां रूहें धनी के चरणों में खेलती हैं क्योंकि यह उनकी अंगना हैं।

कई बड़े मोहोल किनारे सागरों, कई मोहोल टापू झलकत।
ए मोमिन कदमों सुख लेवहीं, जाकी असल हक निसबत।। ३७ ।।

सागरों के किनारे पर बड़ी रांग की हवेलियां हैं तथा सागरों में सुन्दर टापू महल झलकते हैं। यहां मोमिन श्री राजजी महाराज के चरणों का सुख लेते हैं, जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

आगूं बड़ा चौगान बन बिना, दूब कई दुलीचों जुगत।
मोमिन दौड़ के कदम पकड़ें, जाकी असल हक निसबत।। ३८ ।।

पश्चिम की चौगान में कोई वन नहीं है। उसके आगे दूब दुलीचा की कई प्रकार की शोभा है। यहां मोमिन दौड़कर धनी के चरण पकड़ते हैं। यह श्री राजजी की अंगना हैं।

हक हादी रूहें इन चौगानमें, कई पसु पंखी दौड़ावत।
मोमिन लेवें सुख कदमों, जाकी असल हक निसबत।। ३९ ।।

श्री राजश्यामाजी और रूहें चौगान में पशु-पक्षियों पर सवारी कर दौड़ते हैं। मोमिन ऐसे चरणों का सुख लेते हैं। वह श्री राजजी की अंगना हैं।

कहा कहूं बाग अर्स का, जित कई रंगों फूल फूलत।
रूहें क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। ४० ।।

परमधाम के पश्चिम की दीवार से लगा फूलबाग, नूरबाग, जहां कई रंगों के फूल खिलते हैं, की सिफत कैसे करूं? अब रूहें जो धनी की अंगना हैं, वह उनके चरणों के बिना संसार में कैसे रहें?

रूहें खेलें फूल बाग में, कई खुसबोए रस बेहेकत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। ४१ ।।

रूहें फूलबाग में खेलती हैं, जहां सुगन्धि ही सुगन्धि है तो संसार में जो श्री राजजी की अंगना हैं, उनके चरणों के बिना कैसे रह सकती हैं?

विध विधकी बन छत्रियां, जड़ाव चंद्रवा ज्यों चलकत।
ए कदम सुख सुपने लेवहीं, जाकी असल हक निसबत।। ४२ ।।

परमधाम के वन की छाया, जड़ाऊ चन्द्रवा के समान चमकती है तो संसार में जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह इन चरणों का सुख लेती हैं।

इन बाग तले जो बाग है, ए क्यों कहे जुबां सिफत।
ए मोमिन कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ४३ ।।

फूलबाग के नीचे नूरबाग है। उसकी सिफत यहां की जबान से कैसे करें? रूहें, जो धनी की अंगना हैं, संसार में ऐसे सुख को कैसे छोड़ें?

Nijanand App

मोर चकोर मैना कोयली, कई विध वन टहुंकत।
रूहें कदम सुख सुपने लेवहीं, जाकी असल हक निसबत।। ४४ ।।

मोर, चकोर, मैना, कोयल वन में कई तरह की आवाज करते हैं। जो धाम धनी की अंगना हैं, वह रूहें, संसार में यह सुख लेती हैं। उनकी निसबत धनी के चरणों से है।

जो खेलें झीलें चेहेबच्चे, जल फुहारे उछलत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। ४५ ।।

रूहें चहबच्चों में खेलती हैं। झीलना (स्नान) करती हैं। जहां जल के फव्वारे चलते हैं। वह श्री राजजी की अंगना संसार में धनी के चरणों के बिना कैसे रहें?

रूहें खेलें लाल चबूतरे, कई रंगों हाथी झूमत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। ४६ ।।

रूहें लाल चबूतरे पर खेलती हैं, जहां कई रंग के हाथी झूम रहे हैं। अर्श की रूहें श्री राजजी की अंगना संसार में धनी के कदमों के बिना कैसे रहें?

कई बाघ चीते दीपे केसरी, बोलें कूदें गरजत।
रूहें क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। ४७ ।।

कई किस्म के बाघ, चीता, तेंदुआ, केसरी (सिंह) बोलते हैं। कूदते हैं, गरजते हैं। ऐसी श्री राजजी की अंगना रूहें संसार में धनी के चरणों बिना कैसे रहें?

कई विध बाजे बजावहीं, इत बांदर नट नाचत।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ४८ ।।

यहां बन्दर कई तरह के बाजे बजाते हैं और नाचते हैं। ऐसे सुखों को छोड़कर श्री राजजी की अंगना संसार में धनी के चरणों के बिना कैसे रहें?

कई बड़े पसु पंखी अर्स के, कई उड़ें खेलें कूदत।
रूहें क्यों रहें हक चरन बिना, जाकी असल हक निसबत।। ४९ ।।

परमधाम में कई तरह के बड़े पशु-पक्षी उड़ते, खेलते और कूदते हैं तो ऐसी शोभा को छोड़कर श्री राजजी की अंगना संसार में धनी के चरणों के बिना कैसे रहेंगी।

कई विध यों मधुबन में, सुख लेवें चित्त चाहत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। ५० ।।

इस तरह से सखियां मधुवन में चितचाहा सुख लेती हैं तो अब वह श्री राजजी की अंगना इन चरणों बिना कैसे रह सकती हैं?

बड़े मोहोल जो पहाड़ से, इत रूहें खेलें कई जुगत।
सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ५१ ।।

पुखराज के बड़े महलों में कई प्रकार के खेल रूहें खेलती हैं तो संसार में वही श्री राजजी की अंगना धनी के चरणों बिना कैसे रहें?

Nijanand App

चार मोहोल बड़े थंभ ज्यों, सो ऊपर जाए मिलत।
रूहें इत सुख कदमों लेवहीं, जाकी असल हक निसबत।।५२ ।।

पुखराज पहाड़ के चार पेड़ों के महल थंभ (स्तम्भ) के समान हैं जो ऊपर जाकर मिल जाते हैं। रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह इस संसार में इनके चरणों की कृपा से सुख लेती हैं।

हजार हांसें जित गिरदवाए, बीच मोहोल बड़े बिराजत।
इत रूहें सुख लेवें चरनका, जाकी असल हक निसबत।।५३ ।।

पुखराज पहाड़ को घेरकर एक हजार हांस हैं और बीच में महल सुन्दर शोभा देता है। उस सुख को परमधाम की अंगना यहां संसार में लेती हैं।

पहाड़ पुखराजी मोहोलमें, सुख चांदनी लेवत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।५४ ।।

पुखराज पहाड़ के महलों की चांदनी में रूहें सुख लेती हैं। अब वह रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह धनी के चरणों बिना संसार में कैसे रहें?

अति बड़े चार द्वार चांदनी, कई हाथी हलकों आवत।
चरन छूटे ना इन खावंद के, जाकी असल हक निसबत।।५५ ।।

पुखराज पहाड़ की चांदनी पर चारों दिशाओं में बहुत बड़े द्वार हैं। जहां कई हाथियों के झुंड के झुंड आते हैं, इसलिए जो रूहें अर्श की अंगना हैं, वह धनी के चरणों को कैसे छोड़ सकते हैं?

बड़े पसु पंखी इन चांदनी, हक हादी मोहोला लेवत।
रूहें ए चरन क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।५६ ।।

पुखराज पहाड़ की चांदनी पर बड़े पशु-पक्षी श्री राजजी महाराज का दर्शन करते हैं तो श्री राजजी की जो अंगना हैं, वह संसार में उनके चरणों को कैसे छोड़ें?

हाथी बाघ चीते दीपे केसरी, कोई जातें गिन ना सकत।
हक कदम रूहें क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।५७ ।।

जहां हाथी, बाघ, चीता, तेंदुए, केसरी (सिंह) की इतनी जातियां हैं, जिन्हें कोई गिन नहीं सकता, वह श्री राजजी के चरणों में रहते हैं तो श्री राजजी की जो अंगना हैं, वह इन चरणों को कैसे छोड़ें?

ए निपट बड़े मोहोल चांदनी, इत कई मिलावे मिलत।
रूहें न छोड़ें हक कदम को, जाकी असल हक निसबत।।५८ ।।

पुखराज पहाड़ की चांदनी पर बड़ी-बड़ी हवेलियां हैं, जहां पर कई पशु-पक्षी खूब खुशालियों के झुंड मिलते हैं तो जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह संसार में धनी के चरणों को कैसे छोड़ें?

बड़े चार द्वार चबूतरों, क्यों कहूं देहेलानों सिफत।
ए सुख लेवें मोमिन कदमों, जाकी असल हक निसबत।।५९ ।।

हर एक हवेली की चारों दिशाओं में चार बड़े दरवाजों के सामने चबूतरे हैं तो देहलानों की महिमा को कैसे कहूं जो चांदनी पर शोभा देती है। रूहें अपने धनी की अंगना संसार में चरणों से यही सुख लेती हैं।

Nijanand App

ए अति ऊंचे मोहोल बीच के, हक सुख आकासी देवत।
रूहें ए कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ६० ।।

पुखराज पहाड़ के ऊपर आकाशी महल के सुख श्री राजजी महाराज देते हैं जो अत्यन्त ऊंचे हैं तो परमधाम की अंगना इस संसार में इन कदमों को कैसे छोड़ें?

हक हादी रूहें बड़े मोहोलमें, इन गुरजो सुख को गिनत।
ए कदम सुख मोमिन जानहीं, जाकी असल हक निसबत।। ६१ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी, रूहों के आकाशी महल के गुर्जों के सुख कौन गिन सकता है? जो अर्श की अंगना हैं, वह इन सुखों के देने वाले चरणों को संसार में कैसे छोड़ सकती हैं?

सुख लेत ताल मूल जोएके, कई विध केलि करत।
रूहें क्यों छोड़ें हक चरनको, जाकी असल हक निसबत।। ६२ ।।

रूहें पुखराज ताल जहां से जमुनाजी निकली हैं, वहां कई तरह के खेल करके सुख लेती हैं तो संसार में वही रूहें श्री राजजी की अंगना उनके चरणों बिना कैसे रह सकती हैं?

मोहोल बड़े ताल ऊपर, रूहें सुख लेवें हक सों इत।
ए क्यों छोड़ें हक कदम को, जाकी असल हक निसबत।। ६३ ।।

पुखराज ताल के ऊपर जवेरों के महल बने हैं, जहां रूहें श्री राजजी महाराज से सुख लेती हैं तो श्री राजजी की अंगना अब संसार में उनके कदमों बिना कैसे रहें?

दोनों तरफों मोहोल के, आगूं जित दरखत।
सो क्यों छोड़ें कदम सुपने, जाकी असल हक निसबत।। ६४ ।।

जवेरों के महल के दोनों तरफ बड़े वन के पांच-पांच वृक्ष आए हैं। सपने के संसार में इन चरणों के सुख को कैसे छोड़ें? वह श्री राजजी की अंगना हैं।

दोऊ किनारे गुरज दोए, बीच सोले चादरें उतरत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। ६५ ।।

अधबीच के कुंड में जहां सोलह चादरें गिरती हैं उनके दाएं-बाएं दो गुर्ज बने हैं। इन सुखों को अर्श की रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, संसार में धनी चरणों के बिना कैसे लें?

ऊपर चादरों मोहोल जो, बीच बड़े देहेलान देखत।
दोऊ तरफों कदम सुख लेवहीं, जाकी असल हक निसबत।। ६६ ।।

इन सोलह चादरों के दोनों तरफ खास महल बने हैं और उनके बीच बड़ी-बड़ी देहलानें हैं। इन दोनों तरफ के सुख श्री राजजी के चरणों से लेते हैं। वह श्री राजजी की अंगना हैं। वह संसार में इन चरणों बिना कैसे रहें?

अधबीचमें कुंड जो, जित चादरों जल गिरत।
रूहें छोड़ें न कदम सुपने, जाकी असल हक निसबत।। ६७ ।।

अधबीच के कुंड में जहां सोलह चादरें गिरती हैं, इनके सुख को संसार में श्री राजजी की अंगना कैसे छोड़ें?

Nijanand App

तले ताल बन बंगले, जल चक्राव ज्यों चलत।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।६८।।

ताल के नीचे बंगलों और वन की शोभा है जहां चक्रावदार पानी चलता है। ऐसे सुख देने वाले चरणों को छोड़कर संसार में अर्श की अंगना कैसे रह सकती हैं?

कई फुहारे मुख जानवरों, जल तीर ज्यों छूटत।
क्यों भूलें इत सुख कदम के, जाकी असल हक निसबत।।६९।।

बंगलों के चारों तरफ फील पायओं में बने जानवरों के मुख से तीर के समान जल के फव्वारे चलते हैं। इस सुख को श्री राजजी की अंगना संसार में धनी के चरणों के बिना कैसे लें?

ए जंजीरें जलकी, अदभुत सोभा लेवत।
क्यों छोड़ें ए कदम मोमिन, जाकी असल हक निसबत।।७०।।

जहां जंजीर की तरह नहरों की शोभा है। ऐसे सुखों को देने वाले चरणों को संसार में श्री राजजी की अंगना कैसे छोड़ें?

उलंघ जात कई चेहेबच्चों, जल साम सामी जात आवत।
इत कदम सुख मोमिन लेवहीं, जाकी असल हक निसबत।।७१।।

फव्वारों का जल कई चहबच्चों (हौजों) को लांघकर आमने-सामने पड़ता है, जहां मोमिन श्री राजजी के चरणों का सुख लेते हैं। यह उनकी अंगना हैं।

जल आवे जाए ऊपरसे, तले हक हादी रूहें खेलत।
ए सुख क्यों छूटें कदमके, जाकी असल हक निसबत।।७२।।

जल के फव्वारे ऊपर से चलते हैं। नीचे श्री राजश्यामाजी और रूहें खेलती हैं। श्री राजजी के चरणों के यह सुख संसार में कैसे छूटें जो उनकी अंगना हैं।

गिरदवाए बड़े द्वार मेहेराबी, ए मोहोल सोभा लेवत।
इत खेलें रूहें कदम तले, जाकी असल हक निसबत।।७३।।

चारों तरफ बड़े-बड़े दरवाजे, मेहराबें, बनी हैं, जिनसे महल की शोभा बढ़ जाती है। यहां रूहें श्री राजजी के चरणों के तले खेलती हैं तो संसार में अर्श की अंगना अब इन चरणों के बिना कैसे रह सकती हैं?

इत ताल तले बन छाया मिने, रूहें बीच बगीचों मलपत।
ए सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।७४।।

पुखराज ताल के नीचे वन की छाया में बगीचों के बीच रूहें मस्ती से घूमती हैं। संसार में ऐसे सुख देने वाले चरणों को श्री राजजी की अंगना कैसे छोड़ें?

केती चक्रावसे बाहेर, जोए तले चबूतरों निकसत।
रूहें खेलें तले कदमके, जाकी असल हक निसबत।।७५।।

कितनी नहरें घेरकर बाहर ढपे चबूतरे के नीचे आकर जमुनाजी से मिलती हैं। रूहें श्री राजजी के चरणों के तले यहां खेलती हैं तो जो उनकी अंगना हैं, वह संसार में उनके चरणों को कैसे छोड़ें?

Nijanand App

जोए चबूतरों कुंड पर, ऊपर बन झूमत।
ए कदम सुख मोमिन लेवहीं, जाकी असल हक निसबत।।७६ ।।

जमुनाजी के ढपे चबूतरे के और मूल कुण्ड के ऊपर वन की डालियां झूमती हैं। श्री राजजी की अंगना इस संसार में उन सुखों को धनी के चरणों के बिना कहां से लें?

जमुना जल ढांपी चली, ए बैठक सोभा अतंत।
ए सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।७७ ।।

मूल कुण्ड के आगे आधी दूर तक जमुनाजी ढकी चलती हैं। वहां की बैठक अत्यन्त सुन्दर है। श्री राजजी की अंगना जिन चरणों से यह सुख लेती थीं, उसे कैसे छोड़ें?

दोऊ किनारे ढांपिल, आगूं जल जोए खुलत।
रूहें क्यों रहें इन कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।७८ ।।

आधी दूर के बाद जमुनाजी का जल खुल जाता है। दोनों किनारे ढके रहते हैं। अब संसार में श्री राजजी की अंगना ऐसे सुख देने वाले चरणों के बिना कैसे रहें?

एक मोहोल एक चबूतरा, जाए जोए पुल तले मिलत।
रूहें ए कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।७९ ।।

जमुनाजी के दोनों किनारों पर पुल, महल तक एक महल एक चबूतरे की शोभा आई है। रूहें ऐसा सुख देने वाले चरणों को संसार में क्यों छोड़ें? वह श्री राजजी की अंगना हैं।

जोए इतथें मरोर सीधी चली, अर्स आगूं सोभा सरत।
रूहें क्यों छोड़ें इन कदम को, जाकी असल हक निसबत।।८० ।।

जमुनाजी का बहाव पूरब की तरफ से मुड़कर दक्षिण को सीधा चलता है। रंग महल के आगे इनकी शोभा और बढ़ जाती है। रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं ऐसे सुख देने वाले चरणों को संसार में क्यों छोड़ेंगी?

दोऊ पुल के बीच में, बड़ी सातों घाटों सिफत।
रूहें खेलें इत कदमों तले, जाकी असल हक निसबत।।८१ ।।

दोनों पुलों के बीच सात घाटों की बड़ी सुन्दर शोभा है। रूहें यहां श्री राजजी के चरणों तले खेलती हैं। ऐसे सुख देने वाले चरणों को श्री राजजी की अंगना संसार में कैसे छोड़ें?

नूर और नूरतजल्ला, अर्स साम सामी झलकत।
ए रूहें कदम न भूलें सुपने, जाकी असल हक निसबत।।८२ ।।

जमुनाजी के दोनों तरफ अक्षरधाम और परमधाम आमने-सामने शोभा देते हैं। श्री राजजी की अंगना अपने धनी के चरणों को संसार में नहीं भूलेंगी।

दोऊ दरबारकी रोसनी, अंबर नूर भरत।
रूहें कदम न भूलें सुपने, जाकी असल हक निसबत।।८३ ।।

परमधाम और अक्षरधाम दोनों दरबारों की रोशनी आकाश में नहीं समाती है। तो रूहें ऐसे धामों के सुख देने वाले अपने धनी के चरणों को संसार में क्यों छोड़ें?

Nijanand App

अर्स जिमी नूर अपार है, इतके वासी बड़े–बखत।
महामत रूहें हक जात हैं, जाकी हक कदमों निसबत।। ८४ ।।

परमधाम की जमीन का नूर बेशुमार है और वहां के रहने वाले बड़े भाग्यशाली हैं। श्री महामतिजी कहते हैं रूहें श्री राजजी की अंगना हैं, क्योंकि इनका ठिकाना श्री राजजी के चरणों में ही है।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ५२७ ।।

अर्स अंदर निसबत चरन

अर्स अंदर सुख देवहीं, जो रूहों दिल उपजत।
सो रूहें कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। १ ।।

रूहों के दिल में जो इच्छा होती है, रंग महल के अन्दर श्री राजजी महाराज सभी पूरी करके सुख देते हैं, इसलिए जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह उनके चरण क्यों छोड़ेंगी?

अर्स अरवाहें भोम खिलवत, नूर दसों दिस लरत।
सो क्यों छोड़ें इन कदम को, जाकी असल हक निसबत।। २ ।।

मूल-मिलावे में जहां रूहें बैठी हैं, दसों दिशाओं में नूर की तरंगें फैल रही हैं। रूहें जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह इन चरणों को क्यों छोड़ें?

रूहें बारे हजार बैठाएके, हक हांसी को खेलावत।
सो रूहें कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ३ ।।

मूल-मिलावा में बारह हजार रूहों को बिठाकर श्री राजजी महाराज हंसने के वास्ते खेल दिखा रहे हैं, तो रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह उनके कदम क्यों छोड़ेंगी?

लें सुख चेहेबच्चे भोम दूसरी, मोहोल बारे सहस्र जित।
सो क्यों छोड़ें रूहें कदमको, जाकी असल हक निसबत।। ४ ।।

दूसरी भोम में खड़ोकली में स्नान के सुख और बारह हजार मन्दिरों में भुलवनी के खेल के सुख हैं, तो श्री राजजी की अंगना उनके चरणों को क्यों छोड़ें?

रूहें तीसरी भोम चढ़के, बड़े झरोखों आवत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। ५ ।।

रूहें तीसरी भोम में चढ़कर बड़े झरोखे में आती हैं तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह श्री राजजी के चरणों बिना कैसे रहें?

कई इंड पलथें पैदा फना, जिन कादर ए कुदरत।
ए आवें मुजरे इन सरूपके, जाकी असल हक निसबत।। ६ ।।

अक्षर ब्रह्म के हुकम से कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं। वह श्री राजजी से अपनी निसबत जानकर नित्य दर्शन को आते हैं।

नूर मकानसें आवें दीदार को, इत नूरजमाल बिराजत।
रूहें याद कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ७ ।।

जब श्री राजजी महाराज तीसरी भोम की पड़साल पर विराजते हैं तो अक्षरब्रह्म अपने धाम से उनके दर्शन करने के लिए हर रोज आते हैं, तो रूहें जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह इन चरणों की याद को कैसे छोड़ें?

Nijanand App